देवरिया जनपद में साक्षरता प्रतिरुप : एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा*

सारांशिका

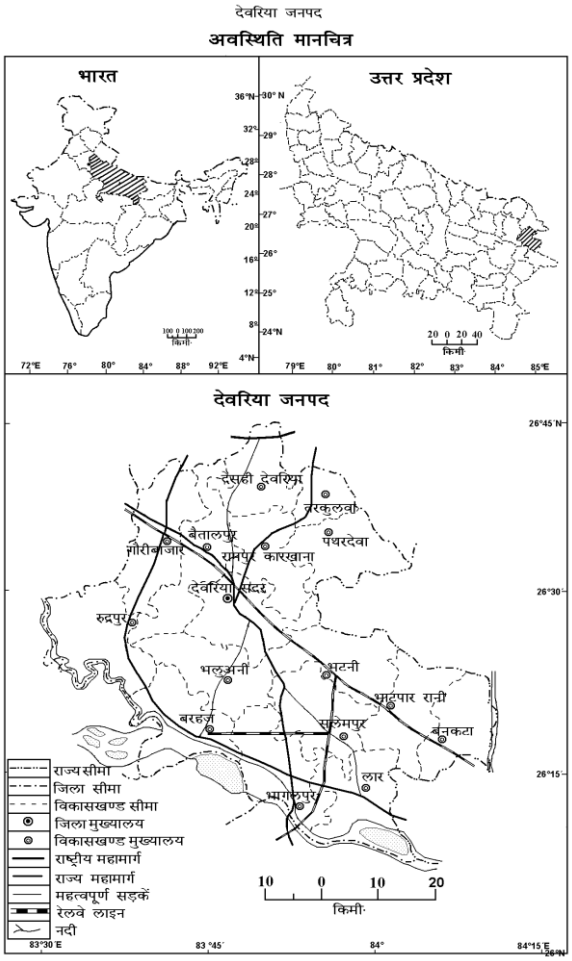
साक्षरता जनसंख्या का एक गुणात्मक तत्व होता है जो किसी भी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास का विश्वसनीय सूचक होता है। साक्षरता किसी भी समाज के विकास को मापने का एक उचित मापदण्ड है। विश्व बैंक के अध्ययनों के द्वारा यह स्थापित हो चुका है कि एक तरफ जहाँ साक्षरता और उत्पादकता का प्रत्यक्ष और कार्यात्मक सम्बन्ध है, वहीं दूसरी तरफ साक्षरता मानव जीवन के सम्पूर्ण पक्षों से सम्बन्धित है। साथ ही साक्षरता केवल जनसंख्या के गुण का एक सूचक नहीं है, बल्कि यह जनांकिकीय तथा सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन का भी महत्वपूर्ण कारक है। सामाजिक विकास के एक महत्वपूर्ण सूचक के रूप में साक्षरता के महत्व को देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेष राज्य के ग्रामीण बाहुल्य जनसंख्या वाले देवरिया जनपद में साक्षरता प्रतिरूप का अध्ययन कर उचित नियोजन प्रस्तुत किया गया है।

प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधन किसी भी क्षेत्र के विकास के आधार होते हैं लेकिन प्राकृतिक संसाधन की महत्ता उस क्षेत्र की मानव शक्ति तथा क्षमता पर ही निर्भर करती है (कायस्था, 1998)। मनुष्य से ही अन्य सभी तत्त्वों को अर्थ तथा महत्व प्राप्त होता है क्योंकि मनुष्य ही भौतिक भू–दृश्य का उपयोगकर्त्ता तथा सांस्कृतिक भू–दृश्य का निर्माता है (ट्रिवार्था, 1969)। प्रकृतिप्रदत्त वस्तुओं का सुनियोजित उपयोग करना ही संसाधन विकास है और मानव अपनी बुद्धि, विवेक, ज्ञान एवं प्राविधिकी के सहयोग से वातावरण में निहित तत्त्वों को अपनी इच्छानुसार उत्पादित करता है। अतः मानव का संसाधनों में महत्व है यह इस बात से ही स्पष्ट हो जाता है कि प्रकृति का कोई भी पदार्थ तब तक संसाधन नहीं बनता है जब तक कि मनुष्य उसे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयोग नहीं करता है। वस्तुतः शिक्षा समाज को एक दिशा प्रदान करने एवं उसके कमजोर पहलुओं, जैसे– सामाजिक कुरीतियों, भाषा–संकीर्णता एवं जाति–प्रथा आदि को परिमार्जित करने में सहायक सिद्ध होती है। साक्षरता के द्वारा ही नगरीकरण, औद्योगीकरण, संचार, व्यापार आदि पर प्रभाव पड़ता है जो वर्तमान युग में किसी राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक है (गोसाल, 1964)। सामान्यतया यह देखा जाता है कि जहाँ स्त्रियाँ कम से कम प्राइमरी स्तर की शिक्षा भी प्राप्त की हुई होती हैं वहाँ अपेक्षाकृत निम्न प्रजनन दर मिलती है। अतः किसी भी क्षेत्र विशेष की अर्थव्यवस्था उसकी साक्षरता पर तथा साक्षरता का अर्थव्यवस्था पर अन्योन्याश्रित प्रभाव पड़ता है (गोल्डन, 1955)। अतः इसी कारण अधिकांशतः निम्न वर्ग के लोग जो शिक्षित नहीं हो पाते हैं गरीबी के दुष्चक्र में ही फंसे रह जाते हैं (सिन्हा, 1998)। इसी सन्दर्भ में यह देखा जा सकता है कि यद्यपि देश में साक्षरता दर में वृद्धि हो रही है फिर भी अभी तक सभी के लिए शिक्षा का राज्य का लक्ष्य बहुत दूर है (गुप्ता एवं मैती, 2008)।

अध्ययन क्षेत्र

देवरिया जनपद उत्तर प्रदेश राज्य के उत्तरी–पूर्वी सीमावर्ती भाग में मध्य गंगा मैदान के उपजाऊ भाग सरयूपारीय मैदान में अवस्थित है। इसका अक्षांशीय विस्तार $26^0 7'$ उत्तर से $26^0 44'$ उत्तर तथा देशांतरीय विस्तार $83^0 30'$ पूर्व से $84^0 15'$ पूर्वी देशांतर के मध्य है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 2538 वर्ग किलोमीटर है (चित्र 1)।

* असिस्टेण्ट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, इन्दूपुर, गौरीबाजार, देवरिया



चित्र–1

जनगणना 2001 के अनुसार देवरिया जनपद की सम्पूर्ण जनसंख्या 2714179 है जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 2445874 है जो कुल जनसंख्या का 90.1 प्रतिशत है। जनपद की कुल कार्यशील जनसंख्या 28.54 प्रतिशत है जिसमें 49.9 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में लगी है। यहां का सामान्य जनघनत्व 1069 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जो राज्य के औसत से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र सघन जनसंख्या वाला क्षेत्र है जिसकी अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है और मुख्यतः कृषि पर ही निर्भर है।

उद्देश्य

भारतीय जनगणना के अनुसार किसी व्यक्ति को साक्षर तभी माना जाएगा जब उसकी उम्र सात वर्ष से अधिक हो तथा वह किसी कथन को पढ़कर, समझकर लिख सकता है। देवरिया जनपद की वर्ष 2001 में कुल साक्षरता 58.6 प्रतिशत है जिसमें 75.01 प्रतिशत पुरुष तथा 42.5 प्रतिशत स्त्रियाँ साक्षर हैं। यद्यपि वर्ष 1991 में कुल साक्षरता 42.3 प्रतिशत थी लेकिन सम्पूर्ण जनसंख्या के सापेक्ष में साक्षरता दर अभी भी बहुत कम है, खासकर स्त्रियों की साक्षरता दर अधिक निराशाजनक है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य क्षेत्र में साक्षरता वितरण प्रतिरूप तथा साक्षरता दर में हुए परिवर्तन का अध्ययन कर उचित नियोजन प्रस्तुत करना है।

आधारभूत आंकड़े एवं विधितन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। वर्ष 1991 तथा 2001 के जनगणना सम्बन्धी आंकडें जनगणना निदेशालय, लखनऊ से प्राप्त किए गए हैं। अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विधि से विश्लेषण कर तथा

तत्स्वरूप प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या की गयी है। विवेचित विषय वस्तु को अधिक बोधगम्य एवं सुग्राह्य बनाने के लिए आंकड़ों का मानचित्रण भी किया गया है।

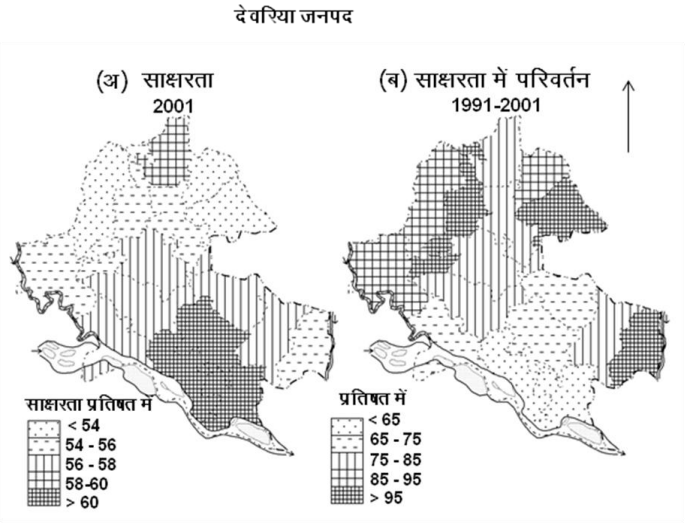
तालिका 1 : विकासखण्डवार साक्षरता (2001)

श्रेणी	साक्षरता (प्रतिशत में)	विकासखण्ड
अति निम्न	< 54	पथरदेवा, तरकुलवा, गौरी बाजार
निम्न	54-56	रूद्रपुर, बैतालपुर, रामपुर कारखाना, बनकटा
मध्यम	56-58	भटनी, बरहज, भाटपार रानी, भलुअनी, देवरिया सदर
उच्च	58-60	देसही देवरिया
अति उच्च	> 60	लार, भागलपुर, सलेमपुर

स्रोत : प्राथमिक जनगणना सार, देवरिया जनपद 2001

साक्षरता वितरण प्रतिरूप

तालिका 1 तथा चित्र 2 (अ) को देखने से ज्ञात होता है कि जनपद में विकासखण्ड स्तर पर साक्षरता में पर्याप्त विभिन्नता है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार अति उच्च साक्षरता दर जनपद के दक्षिणी भाग में स्थित लार, भागलपुर तथा सलेमपुर विकासखण्डों में दृष्टव्य है एवं देसही देवरिया विकास खण्ड में उच्च साक्षरता दर पायी जाती है। यहाँ साक्षरता के उच्च प्रतिशत का प्रमुख कारण शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता तथा शिक्षा के प्रति व्यापक जनचेतना का होना है। मध्यम श्रेणी की साक्षरता दर भटनी, बरहज, भाटपार रानी, भलुअनी तथा देवरिया सदर में परिलक्षित होती है, जबकि निम्न साक्षरता दर रूद्रपुर, बैतालपुर, रामपुर कारखाना, बनकटा विकासखण्डों में तथा अति निम्न साक्षरता दर पथरदेवा, तरकुलवा तथा गौरीबाजार विकासखण्डों में मिलती है। इन विकासखण्डों में निम्न साक्षरता दर के कारणों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि शैक्षणिक सुविधाओं की कमी तथा जनपद मुख्यालय से दूरी इसका प्रमुख कारण है।



चित्र–2

साक्षरता दर में परिवर्तन

किसी भी क्षेत्र की साक्षरता दर में धनात्मक परिवर्तन, उस क्षेत्र के सामाजिक तथा आर्थिक उन्नयन को दर्शाता है (भूटानी, 1995) क्योंकि विश्व बैंक के अध्ययनों से यह स्थापित हो चुका है कि एक तरफ साक्षरता का उत्पादकता से तो वहीं मानव जीवन की गुणात्मकता से प्रत्यक्ष और कार्यात्मक सह–सम्बन्ध है (हॉब एवं शर्मा, 2006)।

अध्ययन क्षेत्र में 1991 से 2001 के दशक के मध्य साक्षरता में 81.21 प्रतिशत की धनात्मक वृद्धि हुई है। साक्षरता में परिवर्तन की विकासखण्डवार स्थिति को तालिका 2 तथा चित्र 2 (ब) में प्रदर्शित

किया गया है। साक्षरता दर में अति उच्च धनात्मक परिवर्तन वाले विकासखण्ड तरकुलवा, गौरी बाजार तथा रूद्रपुर हैं। इन विकासखण्डों में पूर्व में निम्न साक्षरता दर के बाद हुए परिवर्तन से तीव्र वृद्धि परिलक्षित होती है, साथ ही शिक्षण संस्थानों में समुचित सुधार भी इसके लिए उत्तरदायी है। साक्षरता दर में मध्यम श्रेणी में परिवर्तन वाले विकासखण्डों में भलुअनी, देसही देवरिया, भाटपार रानी, देवरिया सदर तथा रामपुर कारखाना आते हैं जबकि निम्न श्रेणी में भटनी, सलेमपुर, बरहज तथा अति निम्न श्रेणी में लार, भागलपुर विकासखण्ड सम्मिलित हैं। स्पष्ट है कि सम्पूर्ण क्षेत्र की शिक्षा के प्रसार में आवश्यक प्रयास तो अवश्य किए गए हैं लेकिन शिक्षा के प्रति ग्रामीण जनता की उदासीनता (गरीबी जनित अरूचि के कारण), तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या तथा समुचित शिक्षण संस्थाओं की कमी आदि समस्याओं ने साक्षरता दर को काफी प्रभावित किया है।

तालिका 2 : विकासखण्डवार साक्षरता में परिवर्तन (1991–2001)

श्रेणी	साक्षरता परिवर्तन (प्रतिशत में)	विकासखण्ड
अति निम्न	< 65	लार, भागलपुर
निम्न	65-75	भटनी, सलेमपुर, बरहज
मध्यम	75-85	भलुअनी, देसही देवरिया, भाटपार रानी, देवरिया सदर, रामपुर कारखाना
उच्च	85-95	तरकुलवा, गौरी बाजार, रूद्रपुर
अति उच्च	> 95	बैतालपुर, पथरदेवा, बनकटा

स्रोत : प्राथमिक जनगणना सार, देवरिया जनपद, 1991 तथा 2001

निष्कर्ष

जनवृद्धि की विभीषिका से बचने हेतु राष्ट्रीय जनसंख्या नीति का तथ्य परक क्रियान्वयन के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में इस समस्या के निवारणार्थ ठोस उपाय करना नितान्त आवश्यक है। इसके लिए क्षेत्र की जनता के शिक्षा के स्तर को बढ़ाना अति आवश्यक है क्योंकि साक्षरता किसी भी समाज के विकास को मापने का एक उचित मापदण्ड है। यद्यपि अध्ययन क्षेत्र में 1991–2001 के दशक में साक्षरता दर में वृद्धि हुई है। लेकिन सम्पूर्ण जनसंख्या के क्रम में साक्षरता दर अभी भी बहुत कम है। विशेषकर स्त्री साक्षरता दर अधिक निराशाजनक है। अतः जनपद में विशेषकर निम्न साक्षरता दर वाले विकासखण्डों में शिक्षा के प्रसार, समुचित शिक्षण संस्थाओं की स्थापना आदि उपायों द्वारा साक्षरता दर में वृद्धि की जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Chandana, R.C. and M.S. Siddhu (1980), *Introduction of Population Geography*, Kalyani Publishers, New Delhi, p.43-92
2. Gosal, G.S. (1964), Literacy in India - An Interpretative Study, *Rural Sociology*, Vol. 26, p. 96
3. Gouldan, H.H. (1955), Literacy and Social Change in Underdeveloped Countries, *Rural Sociology*, Vol. 20, p. 3
4. Gupta, K. R. and Prasenjit Mati (2008), *Rural Development in India*, Vol.-3, Atlantic Publishers and Distributors, New Delhi, p.1-35
5. Haub, Carl and O.P. Sharma (2006), India's Population Reality : Reconciling Change and Tradition; *Population Bulletin*, Sept. 2006, Vol. 61, No. 3, Population Reference Bureau, p.3
6. Sinha, H. K. (1998), *Challenges in Rural Development*, Discovery Publishing House, New Delhi
7. Kayastha, S.L. (1998), Geography of Population, Rawat Publication, p. 158
8. Treewartha, G.T. (1960), A Geography of Population, World Pattern, Pergamon Press John Willey & Sons, New York, p. 122

●